International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 69-73

हिंद महासागर का सामरिक महत्त्व एवं भारत की नवीन प्रवृतियां

डॉ. नरेन्द्र कुमार मीना*

सार

हिंद महासागर का भू–राजनीतिक एवं सामरिक महत्त्व समसामयिक दौर में महत्वपूर्ण विषय है। वैश्विक सन्दर्भों के बदलते परिवेश में भू–राजनीतिक की महत्ता का आकलन एक चर्चा का विषय बना हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंद महासागर की अवस्थित एवं भारत के संदर्भ में सामरिक एवं आर्थिक महत्त्व का आकलन किया गया है। हिंद महासागर की भू–राजनीति एवं सामरिक महत्त्व को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण विश्व एवं प्रमुख महाशक्तियों द्वारा किए जाने वाले आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य एवं अन्य रणनीतिक प्रयासों का संपूर्ण प्रारंभिक विश्लेषण किया गया है। भारत के संदर्भ में हिंद महासागर की अवस्थिति हिंद महासागर का आर्थिक एवं सामरिक महत्व का बदलते वैश्विक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए भारत की नीतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

शब्दकोशः *भू–राजनीतिक, सामरिक, अवस्थित।*

प्रस्तावना

"जिसका हिंद महासागर पर नियंत्रण है उसी का एशिया पर प्रभुत्व है। बीसवीं सदी में यह महासागर सातों समुद्रों का आधारभूत है। विश्व की भवितव्यता का निर्णय इसके जल तल पर होगा" यह कथन प्रमुख राजनीतिक अल्फ्रेड थेयर महान के शब्दों में हिंद महासागर क्षेत्र के महत्त्व को बखूबी से स्पष्ट करता है। अल्फ्रेड थेयर के इस कथन से न केवल हिंद महासागर के ऐतिहासिक महत्त्व का ज्ञान होता है अपितु उसके भू–राजनीतिक महत्त्व का भी पता चलता है। विश्व की भू–राजनीति में महासागर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। जीव एवं खनिज संपदा के अतुल्य भंडार परिवहन या पारागमन के सरल मार्ग होने के कारण विश्व की महान शक्तियां महासागरों पर नियंत्रण हेतु प्रयासरत रही है। इसी सन्दर्भ में भारतीय स्थिति में हिंद महासागर का भू–राजनीतिक महत्त्व अत्यधिक बढ़ा दिया है।

हिंद महासागर का भू–राजनीतिक आकलन

हिंद महासागर विश्व का तीसरा बड़ा महासागर है। इसका क्षेत्रफल 73 मिलियन वर्ग किलोमीटर है जो विश्व के जलीय धरातल का 20 प्रतिशत है। इसके उत्तर में एशिया महाद्वीप का भारतीय उपमहाद्वीप है। इसके पश्चिम में अफ्रीका और पूर्व में इंडोनेशिया, मलेशिया ऑस्ट्रेलिया इत्यादि तो वहीं दक्षिण में दक्षिण सागर एवं अंटार्कटिका महाद्वीप से घिरा हुआ है। प्राचीन काल से ही हिंद महासागर में विदेशी शक्तियां रुचि लेती रही है। 19वीं सदी के प्रारंभिक दशक में ग्रेट ब्रिटेन विश्व में सबसे बड़ी नौ सैनिक शक्ति के रूप में उभर कर सामने आया। कालांतर में, भारतीय उपमहाद्वीप पर ब्रिटिश साम्राज्य के आधिपत्य की समाप्ति के उपरांत हिंद महासागर क्षेत्र में "शक्ति रिक्तता" की स्थिति उत्पन्न हो गई। फलस्वरुप अन्य कई बड़ी विदेशी शक्तियां इस की ओर अग्रसर हुई। विदेशी शक्तियों का इस ओर आकर्षित होने का प्रमुख कारण हिंद महासागरीय देशों का विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण होना भी था। परिणामस्वरूप यू.एस.ए., पूर्व सोवियत रूस एवं चीन आदि बड़े राष्ट्रों ने भी इस क्षेत्र में नौ सैनिक शक्ति

* सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय महुवा, दौसा, राजस्थान।

का विस्तार करना प्रारंभ किया। जैसाकि हिंद महासागर में ब्रिटेन के सहयोग से अमेरिका ने डिएगो गार्सिया द्वीप आधुनिक सैनिक हवाई अड्डे की स्थापना की। यू.एस.ए. के इस क्षेत्र में प्रवेश होने पर पूर्व सोवियत संघ इस ओर अपनी शक्ति आजमाने हेतू अग्रसर हुआ। उपरोक्त घटनाओं के कारण हिंद महासागर का क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संघर्ष का प्रमुख स्थल बन गया जहां एक और विश्व की प्रमुख शक्तियां शक्ति वृद्धि हेतु ही नौ सैनिक शक्ति की वृद्धि में संलग्न है। जबकि हिंद महासागर के निकटतम राष्ट्र इसे "पीस ऑफ जोन" बनाना चाहते हैं किंतु जितने अधिक प्रयास शांति स्थापित हेतु हो रहे हैं, उतने ही शक्ति संघर्ष की राजनीति के कारण वैश्विक शक्तियों ने इस क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित करने हेतु अनेक राजनितिक हथकंडे अपनाये हैं।

हिंद महासागर का सामरिक महत्व के प्रमुख कारण

हिंद महासागर क्षेत्र में किसी बड़ी शक्ति के प्रभाव का अभाव, प्रमुख शक्तियों के द्वारा अपने प्रभाव क्षेत्र अतिरिक्त विस्तार की आकांक्षा, प्रमुख महाशक्तियों में शक्ति की प्रतिस्पर्धा, प्रमुख राष्ट्रों के द्वारा अपनी शक्ति वृद्धि हेतु हिंद महासागर क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों खनिज भंडारों, परिवहन, पारगमन मार्गों का लाभ प्राप्त कर वैश्विक शक्तियों की प्रतिस्पर्धा में शामिल होना, रबड़, जूट, टिन, सोना, हीरा, पेट्रोलियम परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के तीव्र गति से समाप्त होने से हिंद महासागर से नवीनीकरण ऊर्जा– तरंग ऊर्जा, ज्वार ऊर्जा से प्राप्त की जा रही है। अंतरराष्ट्रीय शक्ति संघर्ष की प्रतिस्पर्धा में विरोधी राष्ट्रों की शक्ति वृद्धि को रोकने हेतु राजनीतिक–रणनीतिक गठबंधनों की स्थापना, हिंद महासागर के निकटवर्ती देशों का पश्चिमी एशिया के तेल उत्पादक देशों से तेल प्राप्त करना, इसके अतिरिक्त हिंद महासागर प्रशांत और अटलांटिक महासागर के बाद तीसरा सबसे बड़ा महासागर है। विश्व के तेल भंडार का लगभग 40 प्रतिशत हिंद महासागर में है और यह हिंद महासागर के उत्तर–पश्चमी भाग पर केन्द्रित है, जो खाड़ी देशों के नाम से जाने जाते हैं। विश्व का 80 प्रतिशत क्रूड ऑयल हिंद महासागर के माध्यम से पहुंचाया जाता है। राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चार जलडमरूमध्य– हार्मुज जलडमरूमध्य, बाव–एल–मंडव जलडमरूमध्य, मलक्का जलडमरूमध्य एवं मोजांबिक चैनल है, जहां से अधिकांश समुद्री व्यापार इनसे होकर गुजरता है जिसके कारण हिंद महासागर क्षेत्र एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में आंका जा रहा है।

आर्थिक दृष्टि से विश्व के कच्चे तेल के व्यापार का लगभग 90 प्रतिशत परिवहन हिंद महासागर के चेक पॉइंट के रूप में जाने जाने वाले जल के तीन संकरे मार्गों से होकर जाता है। इसमें फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी के बीच स्थित होर्मुज का जलडमरूमध्य शामिल है, जो फारस की खाड़ी से हिंद महासागर तक एकमात्र समुद्री मार्ग प्रदान करता है। भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है। यह आने वाले दशकों में दुनिया की सबसे बड़ी आबादी व सबसे अधिक क्षमता वाला देश भी होगा। प्रमुख रूप चीन, जापान, दक्षिण कोरिया द्वारा उक्त जलडमरूमध्यों को नियंत्रित करने की होड़ लगी हुई है क्योंकि हिंद महासागर में प्रवेश और निकास की इन्हीं जलडमरूमध्य से नियंत्रित किया जा सकता है। विश्व की एक तिहाई जनसंख्या हिंद महासागर के साथ ही बसी हुई है और यह एक बहुत बड़ा बाजार है जैसाकि राजनीतिक दृष्टि से– हिंद महासागर सामरिक प्रतिस्पर्द्धा का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बनता जा रहा है। चीन अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के हिस्से के रूप में पूरे क्षेत्र में बुनियादी ढाँचागत परियोजनाओं में अरबों डॉलर का निवेश कर रहा है। इस निवेश के माध्यम से चीन हिंद महासागर के सीमावर्ती देशों में अपनी सामरिक बढ़त को बनाना चाहता है। इसी कारण से भारत, अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन जैसी प्रमुख शक्तियों ने अपनी उपस्थिति बढ़ा दी है।

चीन लगातार इस क्षेत्र में अपनी नौसैन्य शक्ति को बढ़ा रहा है। चीन, पाकिस्तान और श्रीलंका की भाँति जिबूती में भी एक नौसैन्य चौकी स्थापित कर रहा है, जो बीजिंग के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। जिबूती में स्थापित नौसैन्य बेस के माध्यम से चीन हिंद महासागर में स्थित परिवहन मार्गों को नियंत्रित कर सकता है, जिससे भारत की कच्चे तेल और ऊर्जा संबंधी सप्लाई लाइन को काटा जा सकता है। चीन अपनी 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल' नीति के अनुसार, भारत को घेरते हुए हिंद महासागर में स्थित देशों में अपने नौसैन्य अड्डे स्थापित कर भारत पर सामरिक बढ़त हासिल करना चाहता है।

हिंद महागरीय क्षेत्र में भारत की नीति

पिछले कुछ वर्षों में भारत की नीति में इस क्षेत्र के संबंध में बदलाव आया है। पहले भारत की नीति में इस क्षेत्र के लिये अलगाव की स्थिति थी। लेकिन अब हिंद महासागर क्षेत्र के लिये भारत की नीति भारतीय सामुद्रिक हितों से परिचालित हो रही है। सागर पहल द्वारा भारत इस क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा पर जोर दे रहा है। साथ ही इस रणनीति को मूर्तरूप देने के लिये सागरमाला परियोजना पर कार्य कर रहा है, ताकि भारत अपनी तटीय अवसंरचना को सुदृढ़ करके अपनी क्षमता में वृद्धि कर सके। इस तरह भारत न सिर्फ हिंद महासागर क्षेत्र में अपने हितों को साध सकेगा बल्कि ब्लू इकॉनमी के लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकेगा। ब्लू इकॉनमी पर बल देने तथा हिंद महासागर क्षेत्र के महत्त्व को देखते हुए ही भारत सरकार बिम्सटेक जैसे संगठनों से सुद्रद संबंधों पर पुनः विचार कर नये आयाम जोड़ रही है। सागर पहल वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री मोदी की मॉरीशस यात्रा के दौरान नीली अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करने हेतु एक सिद्धांत है। यह एक समुद्री पहल है जो हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की शांति, स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिये हिंद महासागर क्षेत्र को प्राथमिकता देती है। यह विश्व के सभी देशों की नौ सेनाओं और समुद्री सुरक्षा एजेंसियों के बीच सहयोग को तेज करने के लिये सहयोग प्राप्त करने का एक मंच है। भारत के संपूर्ण क्षेत्र के लिये सुरक्षा प्रदाता की भूमिका निभाते हुए सागर पहल हिंद महासागर में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह पहल 1997 में स्थापित हिंद महासागर क्षेत्रीय सहयोग संघ के सिद्धांतों के अनुरूप है।

हिंद महासागर क्षेत्र में भारत प्रमुख संवादों के माध्यम से अपनी सामरिक साझेदारियों को मजबूत कर रहा है। इस क्षेत्र में भारत के सामने जिस तरह की समुद्री सुरक्षा संबंधी चुनौतियां खड़ी हैं, उन्हें देखते हुए भारत के लिए इस क्षेत्र की अन्य प्रमुख ताकतों के साथ व्यापक और समझदारी भरी साझेदारियां करना जरूरी हो गया है। इनमें बहुपक्षीय और द्विपक्षीय स्तर पर मजबूती से संवाद करना शामिल है। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान के साथ भारत के क्वाड्रीलैटेरल सिक्योरिटी डायलॉग में भारत अपने सामरिक दांव–पेंच के तहत हिंद महासागर क्षेत्र में कई ऐसी साझेदारियां कर रहा है। भारत का एक ऐसा ही सामरिक साझीदार फ्रांस है। भारत ने लंबे समय से हिंद महासागर क्षेत्र में अहम भूमिका निभाई है।

भारत और फ्रांस दोनों ही हिंद महासागर क्षेत्र के बड़े सामरिक तौर पर उभरती हुई शक्तियाँ हैं जिन्होंने हाल के वर्षों में हिंद–प्रशांत क्षेत्र में अपने साझा हितों को देखते हुए, भारत और फ्रांस ने अपनी सामरिक साझेदारी बढ़ाने की ओर अग्रसर हुए है। द्विपक्षीय स्तर पर भारत और फ्रांस के बीच बढ़ते सामरिक तालमेल का केंद्र, दोनों देशों की नौसेनाओं का साझा युद्धाभ्यास वरुण रहा है। 2022 में भारत और फ्रांस के बीच वरुण युद्धाभ्यास का 20 बीसवां संस्करण हुआ, जिससे दोनों देशों के बीच संपर्क का दायरा और भी बढ़ा। इस नौसैनिक अभ्यास के मुख्य लक्ष्य आपस मेमिलकर काम करना और इस तरह दोनों देशों की नौसेनाओं का एक दूसरे के पूरक बनाना रहा है। हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की सामरिक गतिविधियां बढ़ने के कारण वरुण जैसे नौसैनिक अभ्यासों के जरिए समुद्री साझेदारी बढ़ाना, भारत और फ्रांस दोनों के हित में है। फ्रांस भी इस क्षेत्र में अपने द्वीपों के जरिए हिंद महासागर के देश की अपनी पहचान को ज्यादा उत्साह से स्वीकार कर रहा है। फ्रांस, रियूनियन द्वीपों को केंद्र में रखकर हिंद महासागर में अपनी उपस्थिति को लगातार बढ़ा रहा है।

हिंद महासागर में फ्रांस की हिस्सेदारी को हम निम्न रूपों में समझ सकते है – हिंद महासागर में फ्रांस के कब्जे वाले द्वीप रियूनियन एवं मेयोट द्वीप है। हिंद महासागर के क्षेत्रीय संगठनों इंडियन ओशियन रिम एसोसिएशन, इंडियन ओशियन कमीशन, इंडियन ओशियन नेवल सिम्पोजियम में फरांस की सदस्यता एवं हिंद महासागर में फ्रांस का विशेष आर्थिक क्षेत्र पूरे समुद्री क्षेत्र का दस प्रतिशत है। फ्रांस के कुल विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र का 20 प्रतिशत हिस्सा हिंद महासागर में पड़ता है। 2021 में भारत ने पहली बार, फ्रांस के अहम नौसैनिक अभ्यास ला पेरॉस में भागीदारी की थी। इस अभ्यास में भारत के अलावा क्वॉड के तीन अन्य देशों– ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका की नौसेनाओं ने भी शिरकत की थी।

ऑकस के समकक्ष नया गठबंधन

हिंद महासागर और व्यापक हिंद प्रशांत क्षेत्र में फ्रांस ने भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच एक नए गठबंधन प्रस्ताव रखा था, जिसे हिंद प्रशांत क्षेत्र में समान विचारधारा वाले देश मिलकर एक साझा उद्देश्य प्राप्त कर सकें। ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और ब्रिटेन के बीच ऑकस गठबंधन बनने के कारण, फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया के बीच पहले से हुआ एक रक्षा समझौता रद्द हो गया था। इससे दोनों देशों के संबंधों में कड़वाहट भी आ गई थी। इसके बावजूद भारत और फ्रांस के संबंध मजबूत बने रहे हैं। वास्तव में हिंद–प्रशांत क्षेत्र को लेकर अपने साझा नजरिए और हितों के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताते हुए, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति मैक्रों ने हिंद–प्रशांत क्षेत्र को स्वतंत्र और खुला बनाए रखने के लिए 'नए नए तरीके अपनाने पर जोर दिया था। इसे नरेंद्र मोदी और इमैन्युअल मैक्रों के बीच मजबूत दोस्ती की मिसाल के तौर पर देखा गया है।

भारत और फ्रांस दोनों ने ही खास तौर से नौसैनिक संपर्कों के जरिए अपनी समुद्री साझेदारी को आगे बढ़ाने पर काफी ध्यान दिया है। हाल ही में भारत ने इंडियन ओशियन नेवल सिम्पोजियम मेरीटाईम एक्सरसाइज को गोवा के पास अरब सागर में आयोजित किया था। 2020 में फ्रांस के इंडियन ओशियन रिम एसोसिएशन का औपचारिक रूप से सदस्य बनने के बाद से फ्रांस ने इस क्षेत्र में अपने बहुपक्षीय संवाद को काफी बढ़ाया है। आईमेक्स–22 में पर्यवेक्षक बनने के साथ–साथ फ्रांस ने आई.ओ.आर.ए. को अपने शांतिपूर्ण और समृद्ध हिंद महासागर के नजरिए को साकार करने के लिए क्षमता के निर्माण और आपसी तालमेल बढ़ाने में भी फंड के जरिए मदद की है। चूंकि, भारत इंडियन ओशियन रिम एसोसिएशन के प्रमुख प्रस्तावकों में से एक रहा है, ऐसे में इस संगठन के साथ फ्रांस के व्यापक संवाद से दोनों देशों को निश्चित रूप से हिंद महासागर में आपसी रिश्ता और मजबूत बनाने में मदद मिलेगी।

इसी के साथ भारत को हिन्द महासागर क्षेत्र में अपना दावा बढ़ाने के लिए वैश्विक शक्तियों के साथ महत्त्वपूर्ण नीतियां अपनानी होंगी, जिनमें इस क्षेत्र के सदस्यव देशों के स्थायी विकास एवं संतुलित प्रगति को ध्यान में रखते हुए, क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग के लिये साझी जमीन सृजित करना, आर्थिक सहयोग के ऐसे क्षेत्रों पर बल देना जो साझे हितों के विकास के लिये तथा परस्पर लाभ प्राप्ता करने के लिये अधिकतम अवसर प्रदान करते हैं। व्यापार के उदारीकरण के लिये सभी संभावनाओं एवं अवसरों का पता लगाना, क्षेत्र के अंदर माल, सेवाओं, निवेश एवं प्रौद्योगिकी के मुक्ते एवं अधिक प्रवाह की दिशा में आने वाली अड़चनों को दूर करना तथा बाधाओं को कम करना, सदस्य् देशों के बीच किसी भेदभाव के बिना तथा अन्य क्षेत्रीय आर्थिक एवं व्याापार सहयोग व्यकवस्थागओं के अंतर्गत बाध्यताओं पर प्रतिकूल प्रभाव के बिना सदस्य देशों के व्यावपार एवं उद्योग, शैक्षिक संस्थानों, विद्धानों एवं लोगों के बीच घनिष्ठ अंतःक्रिया को प्रोत्साहित करना।

अत : हिंद महासागर क्षेत्र में रणनीतिक बढ़त हेतु भारत को और अधिक सक्रिय रूप से समुद्री हितों को लेकर नीति को गति देने की आवश्यकता है, जिससे इस क्षेत्र में विकसित हो रही परिस्थितियों में वह प्रमुख भूमिका निभा सके। अतः भारत को सागर पहल पर बल देना होगा और इसके लिये एक ऐसे ढाँचे का निर्माण करना होगा जिसे उचित रूप से क्रियान्वित किया जा सके। भारत द्विपक्षीय, त्रिपक्षीय और बहुपक्षीय साझेदारियों के माध्यम से हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी स्थिति को मजबूत कर सकता है और इसके लिये भारत को सागरमाला परियोजना पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। यह परियोजना अवसंरचना को तटीय भागों में सुदृढ़ करेगी, जिससे विनिर्माण, व्यापार तथा पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा। विश्व के लगभग सभी देश समुद्र में स्वतंत्र नौ–परिवहन को लेकर एक मत हैं, लेकिन विभिन्न देशों में नौ–परिवहन की स्वतंत्रता की परिभाषा को लेकर गहरे मतभेद बने हुए हैं। इसका कारण कई देशों के कानूनों का अंतर्राष्ट्रीय समुद्री कानून से भिन्न होना है। इस विषय पर भारत अन्य देशों के मध्य मतभेदों को समाप्त करने और एक निश्चित परिभाषा पर सहमत होने के लिये नेतृत्व की भूमिका निभा सकता है। भारत को चाहिये कि वह हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी पहुँच में वृद्धि करे। परिचालन द्वारा भारत अपनी उपस्थिति को इस क्षेत्र में मजबूती से दर्ज करा सकता है। यह इस क्षेत्र में भारत के दीर्घकालीन हितों की पूर्ति करेगा, साथ ही इस क्षेत्र की स्थिरता को भी मजबूती प्रदान करेगा। इस क्षेत्र में भारत के जापान जैसे सहयोगी पहले से ही मौजूद हैं, जो भारत को आवश्यकता के समय लॉजिस्टिक सपोर्ट उपलब्ध करा सकते हैं। सागरमाला परियोजना जैसी अन्य

परियोजनाओं को भी आरंभ किया जा सकता है। इन परियोजनाओं के माध्यम से बंदरगाहों के विकास, बेहतर कनेक्टिविटी, बंदरगाह आधारित औद्योगीकरण, तटों के करीब रहने वाले लोगों का सामाजिक–आर्थिक विकास, निवेश तथा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से नई नौकरियों के सृजन पर ध्यान दिया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Azam, K. J. (2019); Indian Ocean : The New Frontier, Publishers : Taylor & Francis.
2. Brewster, D.; (2018); India and China at Sea: Competition for Naval Dominance in the Indian Ocean; Publisher: OUP India.
3. F.,Sithara (2015); United States-China-India, Strategic Triangle in the Indian Ocean Region; Publishers: KW Publishers.
4. Grare, F. &Samaan, J. L. (2023); The Indian Ocean as a New Political and Security Region, Publisher : Springer International Publishing.
5. Myo, K. M. M. (2011); China and Indian Ocean: Strategic Interests in the 21st Century, Publisher: Lulu Press.
6. Mookherjee,M. & Goud, R.S. (2015); China in Indian Ocean Region, Publishers: Allied Publishers Pvt. Limited.
7. Ortolland, D., Pirat, J. P. & Verret,T.(2017); Geopolitical Atlas of the Oceans: The Law of the Sea, Issues of Delimitation, Maritime Transport and Security, International Straits, Seabed Resources; Publisher: TECHNIP.
8. Valko,I.,J.Landovský & R., Martin (2014); Strategic Regions in 21st Century Power Politics : Zones of Consensus and Zones of Conflict; Publisher : Cambridge Scholars Publisher.
9. Zhu, C. (2017); India's Ocean, Can China and India Coexist? Publishers: Springer Singapore.

❖◆❖